राम राज्य की ओर

श्री राम के तत्व की अन्तः जागृति - राम राज्य की ओर जाने का एकमात्र मार्ग

इस आधुनिक समय में जब भ्रम और अहंकार मन पर बादल छाए हैं, केवल श्री राम के सार को समझने और जागृत करने से ही हम भ्रम के समुद्र, भवसागर को पार कर सकते हैं। हालांकि, श्री राम के सार को पढ़ने या प्रवचन सुनने या किसी अन्य मानसिक गतिविधि के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है। श्रीराम के किसी भी सिद्धांत की आंतरिक समझ भीतर की सूक्ष्म ऊर्जा के जागरण से आती है।

कुंडलिनी नामक सूक्ष्म ऊर्जा का वेदों और उपनिषदों जैसे सभी शास्त्रों और पवित्र ग्रंथों में बहुत उल्लेख है। इसकी कार्यप्रणाली और लाभ श्री राम और उनके भाइयों को उनके गुरु वशिष्ठ द्वारा भी बताए गए थे। हमारा सूक्ष्म यंत्र तीन नाड़ियों और सात ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) से मिलकर बना है। जब हमारे शरीर में कुंडलिनी जागृत होती है, तो हमारा शरीर प्रत्येक चक्र पर विभिन्न देवी-देवताओं का मंदिर बन जाता है, उनमें से एक श्रीराम हैं, जो हमारे हृदय के मंदिर में निवास करते हैं।

जैसे श्री हनुमान जी ने अपना सीना चीर कर, अपने हृदय में निवास करने वाले श्री सीता राम के दर्शन करवाए थे, उसी प्रकार हृदय या अनाहत चक्र के दाहिनी ओर अपनी पत्नी श्री सीता के साथ निवास करते हैं। जब कुंडलिनी इस चक्र से गुजरती है तो श्रीराम जागृत हो जाते हैं और व्यक्ति स्वतः ही उनके गुणों को अपनाने लगता है। हमारे दैनिक जीवन में गुणों को अपनाना किसी भी मानसिक गतिविधि या बाहरी अनुशासन के माध्यम से नहीं होता है, लेकिन स्वतः होने वाली पाचन और दिल की धड़कन की तरह केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर अनायास ही होता है।

यद्यपि मणि (कुंडलिनी) संसार में प्रकट होती है, लेकिन श्रीराम की कृपा के बिना कोई भी इसे प्राप्त नहीं कर सकता है। इसे प्राप्त करना भी आसान (सहज) है लेकिन दुर्भाग्य से लोग आसान तरीके को अस्वीकार कर देते हैं।
श्रीरामचरितमानस

राम-राज्य: क्या यह एक काल्पनिक विश्वास या एक संभावित वास्तविकता?

हम रामराज्य की बात करते हैं लेकिन रामराज्य व्यवस्था के बाहरी शुद्धिकरण के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक शुद्धिकरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है । जब तक सभी राजनेता और साधारण जनता अपने भीतर की ईमानदारी को जागृत नहीं करते हैं, तब तक रामराज्य सिर्फ एक काल्पनिक समाज ही होगा, जो सैद्धांतिक रूप में अच्छा लगता है लेकिन व्यवहार में नहीं।

अगर रामराज्य आना है, तो राम को उन लोगों के दिलों में पैदा होना चाहिए जो प्रशासन के प्रबंधन में शीर्ष पर हैं।
~ परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ~

श्री राम सत्य, धर्म और मर्यादित व्यवहार के अपने सभी गुणों के साथ हमारे हृदय में निवास करते हैं। एक स्नेहमय पिता, पति और परोपकारी राजा के रूप में श्री राम का जीवन एक आदर्श नेता और मानव की परिकल्पना करता है।

काकभुसूँडी ने गरुड़ से कहा, "हे गरुड़, नागों के शत्रु, यह कलियुग पाप और झूठ का घर है। लेकिन कलियुग में सबसे बड़ा वरदान यह है कि मानव भव के जाल से सहजता से मुक्त हो जाता है।
(श्री रामचरितमानस)

सत्य के खोजियों को सहज परिवार की तरफ से इस पावन दीपावली पर्व की बधाई

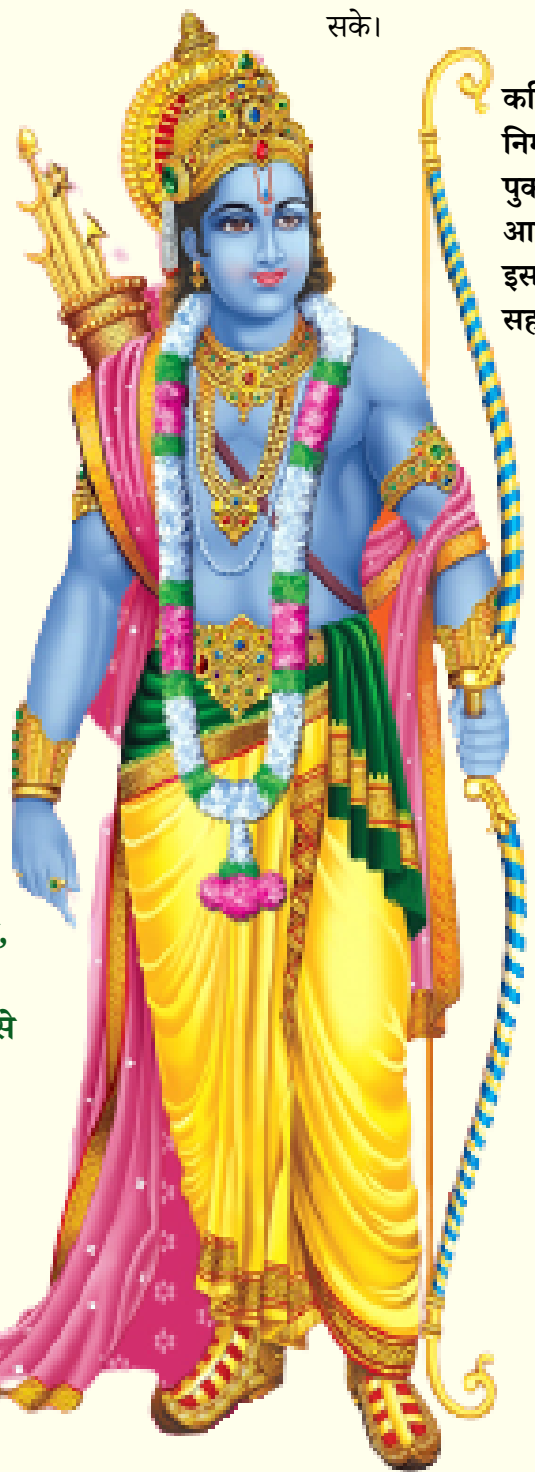

जिस प्रकार एक दीपक जो जला हुआ नहीं है, वह प्रकाश नहीं फैला सकता है; उसी प्रकार जब तक हमारे भीतर का प्रकाश अज्ञानता के काले बादलों से आच्छादित है, तब तक श्रीराम का चरित्र, जिसकी सम्पूर्ण भारतवर्ष में बहुत चर्चा, संवाद और पूजा होती है, कभी भी हमारे अस्तित्व में प्रवेश नहीं कर सकता है। केवल बात करने से हम श्री राम की तरह नहीं बनेंगे, यह कुंडलिनी जागरण, जो एक जीवंत क्रिया है, के माध्यम से ही ऐसा संभव है। कुंडलिनी जागरण एक वास्तविकता है जो हमारे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर अनुभव होती है जिसके परिणामस्वरूप मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के तत्व से पोषित होता है।

लोग कह सकते हैं कि वे श्रीराम की बहुत पूजा करते हैं लेकिन जब तक कि हम भीतर से जुड़े न हों, वह पूजा केवल बाहरी है । असली दशहरा हमारे भीतर तब होता है, जब मानव व्यक्तित्व में अहंकार के रूप में बसा रावण कुंडलिनी की शीतल अग्नि से जलकर नष्ट हो जाता है। यह बुराई पर अच्छाई की असली जीत है, लेकिन यह हमारे हाथों में है। अपनी पूर्ण स्वतंत्रता में ही हमको इस जागृति की इच्छा करनी है। इसे थोपा नहीं जा सकता। यह एक ऐसी खोज है जो शुद्ध इच्छा के साथ काम करती है और किसी चीज के साथ नहीं। इसलिए सहज योग में घटित होने वाली कुंडलिनी के सूक्ष्म और सहज जागरण के माध्यम से ही हम श्रीराम के तत्त्व को पूरी तरह से अपना सकते हैं और उन्हें अपने हृदय के मंदिर में स्थापित कर सकते हैं।

> **"उनके आदर्शों को प्राप्त करने के बाद, हम दूसरे स्तर तक पहुंचते हैं क्योंकि वह मानव के आदर्श थे। यह महान चीज है कि भगवान हमारे आदर्श बनने के लिए मानव रूप में इस दुनिया में आए। उन्होंने धर्म को बनाए रखने की शक्ति दिखाने के लिए सभी कठिनाइयों को पार किया था। यही विश्व धर्म और योग की अवस्था है।"**
> **परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी**

कुंडलिनी और सूक्ष्म तंत्र

कुंडलिनी दिव्य शक्ति का एक रूप है जो में रीढ़ की हड्डी के आधार पर त्रिकोनास्थि में साढ़े तीन कुंडलों ले कर निवास करती है, जिसे मूलधार कहा जाता है। इस प्रकार यह कुंडलिनी ऊर्जा 'मातृ' ऊर्जा है जो मानव सूक्ष्म तंत्र के विभिन्न केंद्रों के माध्यम से उठती हुई, छह चक्रों को भेदती हुई, अंततः तालू भाग में सहस्रार का भेदन करती है। जब यह कुंडलिनी जागृत हो जाती है, तो आंतरिक आत्मा (आत्मा) का मिलन (योग) परमात्मा के साथ होता है और व्यक्ति चेतन के एक नए स्तर का अनुभव करता है। इसे आत्मसाक्षात्कार भी कहते हैं।

कहते हैं कि स्वयं को जाने बिना परमात्मा को नहीं जान सकते। आत्म-साक्षात्कार के बाद ही वास्तव में सभी धर्मों, संतों और श्रीराम सहित सभी अवतारों के सत्य को समझा जा सकता है। प्राचीन काल में इस ऊर्जा का जागरण बहुत कठिन था और एक गुरु केवल एक शिष्य को आत्म-साक्षात्कार दे सकता था। यह प्रक्रिया अत्यंत कठोर थी और इसमें गुरु के निर्देशों के तहत मन और शरीर की सख्त शुद्धि के लिए कठिन क्रियाओं और तपस्या का अनुसरण करना होता था। बर्फ से ढके हिमालय की ठंड में तपस्या से लेकर किष्किंधा के गहरे जंगलों में एकटक ध्यान करने के बाद भी, केवल और केवल, सबसे शुद्ध और समर्पित लोगों को अपना आत्मसाक्षात्कार मिल सकता था। नतीजतन, लाखों लोगों में से, मुश्किल से एक या दो अपने आत्मा को प्रबुद्ध कर सके।

कलियुग का सबसे बड़ा उपहार सहज योग का ज्ञान है, जो वर्ष 1970 में परम पावनी श्री माताजी निर्मला देवी द्वारा स्थापित सामूहिक आत्म-साक्षात्कार की विधि है। प्यार से श्री माताजी के नाम से पुकारी जाने वाली, उन्होंने इच्छुक साधकों को, चाहे वे संख्या में कितने भी कम या ज्यादा क्यों न हों, आत्म-साक्षात्कार देने की एक विधि खोजी है। 'सहज' का अर्थ आसान, अपने आप घटित होने वाला है, इसलिए परमात्मा के साथ यह मिलन, 'योग', सहज योग में कुंडलिनी जागरण के माध्यम से अत्यंत ही सहज हो जाता है।

शुद्ध इच्छा व्यक्त होने के बाद मां कुंडलिनी सभी चक्रों को पार करते हुए, सहस्रार चक्र खोलते हुए, अंततः आत्मा के प्रकाश से चित्त को प्रकाशित कर देती हैं। जैसे-जैसे प्रकाश प्राणी में प्रवेश करता है, अज्ञान का सारा अंधकार दूर हो जाता है और हमारे हाथों की हथेलियों पर और सिर के ऊपर ठंडी हवा की सूक्ष्म तरंगों के रूप में व्यक्त परमात्मा के साथ संबंध का अनुभव होना शुरू हो जाता है।

मानव सूक्ष्म तंत्र

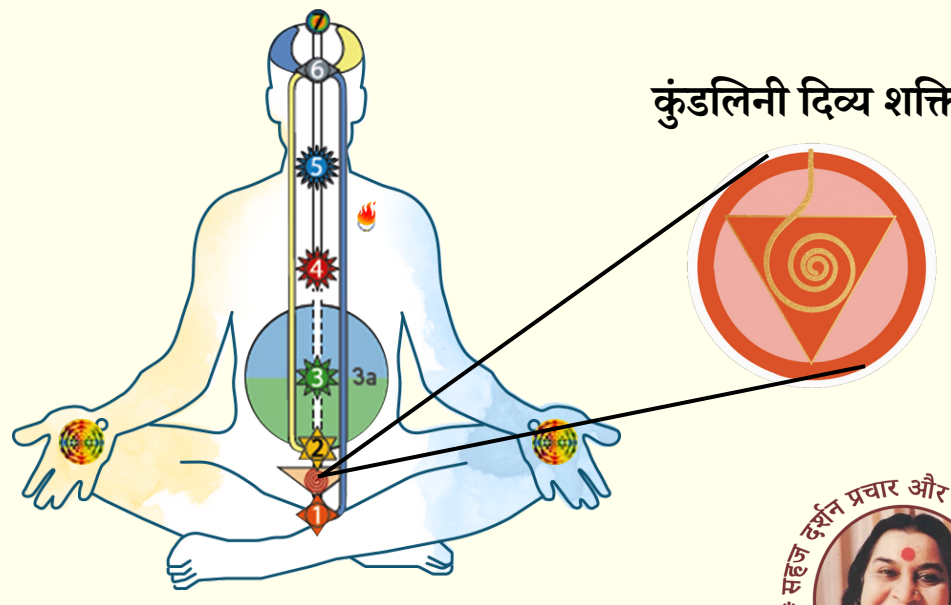

Sahaja Darshan Prachaar aur Prasaar Samiti
adlakhagk@gmail.com | +91 98712 78936
www.nirmaldham.org | www.sahajayogamumbai.org
www.sahajayoga.org.in | Toll Free - 1800 2700 800